ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

एक एव नमस्यो विक्ष्वीड्यः। अथर्व0 2/2/1
हे मनुष्यों प्रजाओं में एक परमेश्वर ही पूजा के योग्य और नमस्करणीय है।
O men of the world ! In this creation God alone is adorable & worthy of worship.

वर्ष 39, अंक 18 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 7 मार्च, 2016 से रविवार 13 मार्च, 2016
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्द: 192 वार्षिक शुल्क: 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 192वां जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ संपन्न

60 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ सदस्यों व पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों को किया सम्मानित

जन्म से ही आर्य समाजी संस्कार होने से कर पाया समाज व देश की सेवा –सुभाष आर्य

MDH की ओर से टीवी व समाचारे पत्रों में प्रकाशित हुए शुभकामना विज्ञापन | हरियाणा सरकार को शुभकामना विज्ञापन प्रकाशित करने पर हार्दिक धन्यवाद

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 192 वें जन्मोत्सव के अवसर पर फाल्गुन कृष्ण दशमी विक्रमी सम्वत् 2072 तद्नुसार शुक्रवार, 4 मार्च 2016 को भव्य भजन संध्या एवं प्रेरक मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित कर आर्य समाज मोती नगर (निकट 17 ब्लॉक), नई दिल्ली-15 में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

ऋषि पर्व के अवसर पर यज्ञ में ब्रह्मा आचार्य यदुवीर आर्य और यजमान परिवारों के रूप में श्रीमती सुनीता एवं श्री कुलभूषण खुराना, श्रीमती नीरजा एवं श्री रतन तनेजा, श्रीमती आशा एवं श्री भूषण लाल मल्होत्रा, श्रीमती दीप्ति एवं श्री मनीष नागपाल ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। उसके बाद कार्यक्रम में श्री देव कुमार आर्य ने अपने साथियों सहित मधुर भजनों के माध्यम से सभी श्रोताओं का मन मोह लिया। उनके अलावा अन्य कलाकारों ने भी अपनी प्रस्तुतियां श्रोताओं के समक्ष रखी। कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने की और मुख्यातिथि के रूप में श्री सुभाष आर्य; महापौर (दक्षिण दिल्ली) व विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री शिवचरण गोयल जी; पूर्व विधायक (मोती नगर), श्री भारत भूषण मदान; निगम पार्षद् (मोती नगर वार्ड) ने शिरकत की। इस अवसर पर श्री बलदेव जिन्दल, वरिष्ठ समाजसेवी को विशेष सम्मान दिया गया।

- अनेक स्थानों पर लगाए गए ऋषि लंगर व साहित्य वितरण स्टाल
- भजन संध्या यज्ञ एवं गीतों के कार्यक्रम रखे गये
- आर्य समाज मंदिरों को विशेष रूप से सजाया गया

कार्यक्रम का संचालन श्री विनय आर्य; महामंत्री; दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने किया।

...शेष पेज 4 पर

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव एवं विशाल ऋषि मेला संपन्न

आधुनिक परिपेक्ष्य में महर्षि दयानन्द की और अधिक उपयोगिता –डॉ. रामप्रकाश

हिन्दू जाति के जागने का दिवस है बोध दिवस –स्वामी विज्ञानानन्द | हम देखें कि हम कितने आगे बढ़े –महाशय धर्मपाल

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव एवं शिवरात्रि के अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य के तत्वावधान में विशाल ऋषि मेला सोमवार 7 मार्च 2016 को रामलीला मैदान, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञ से हुआ।

बोधोत्सव के दिन ही मनाया गया पंडित लेखराम बलिदान दिवस

यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. सत्यकाम जी थे। वेदपाठ आर्ष गुरुकुल किंग्जवे कैंप जी.टी.बी. नगर, हड़सन लेन के ब्रह्मचारियों ने किया व यजमान श्रीमती सुनीता एवं श्री धर्मदेव खुराना, श्रीमती उषा एवं श्री सुभाष चांदना, श्रीमती सविता एवं श्री अतुल आर्य, श्रीमती सुनीता एवं श्री सन्दीप अग्रवाल उपस्थित रहे। ध्वजारोहण श्री अरुण बंसल जी (चेयरमैन, बंसल वायर) ने किया।

खेल प्रतियोगिता के संयोजक श्री कृपाल सिंह रहे। प्रतियोगिताओं का उद्घाटन श्री प्रकाश शर्मा द्वारा किया गया।

पं. लेखराम बलिदान स्मृति व्याख्यान श्रीमती ऊषा किरण आर्या की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

...शेष पेज 5 पर

स्वाध्याय

हे शक्ति के स्वामी!

शिक्षेयमस्मै दित्सेयं शचीपते मनीषिणे। यदहं गोपतिः स्याम्।।
-ऋ. 8/14/2; साम. उ. 9/2/9; अथर्व. 20/27/2
ऋषिः- गोषूक्तयश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ।। देवता-इन्द्रः।।
छन्दः-विराड्गायत्री।।

विनय - हे शचीपते! हे शक्ति के स्वामी! तुम सर्वोत्कृष्ट ज्ञानमयी शक्ति के स्वामी हो; और परिपूर्ण होने के कारण अपनी इस शक्ति का जगत् के पालन-पोषण में पूर्णतया सदुपयोग कर रहे हों, परन्तु मैं यद्यपि अपूर्ण जीव हूं, तो भी मुझे अपनी शक्ति का यथाशक्ति पूरा सदुपयोग सदा तुम्हारा अनुकरण करने में ही करना चाहिए। इसलिए मैं चाहता हूं और संकल्प करता हूं कि यदि मैं 'गोपति' होऊं, सच्चा वैश्य बनकर भूमि, गौ, धन का (वैश्यशक्ति का) स्वामी होऊं तो मैं इसका सदुपयोग ही करूंगा। हे सर्वान्तर्यामी परमेश्वर! तुम मुझे ऐसी बुद्धि देना, ऐसी समझ और योग्यता देना कि मैं यह धन संसार के केवल 'इस मनीषी पुरुष' के लिए ही देना चाहूं और इसे ही दूं; किसी और को देने की मुझे कभी इच्छा तक न हो, कभी प्रलोभन तक न हो। यह 'मनीषी' वह पुरुष होता है जो अपने मन का ईश है, जो कभी क्षणभर के लिए भी मन का गुलाम नहीं होता, जो जितेन्द्रिय है, जिसे अपने पर पूरा काबू है। ऐसे ही पुरुष को दिया हुआ धन सदुपयुक्त होता है, हजारों गुणा फल लाता है, सर्वलोक का हित करता है। हमारे धन के एकमात्र अधिकारी, ये आत्मवशी पुरुष ही हैं। वास्तव में हमारा सब धन, इन संयमी महानुभावों का ही है, परन्तु हे प्रभो! बहुत बार हम अपने किन्हीं तुच्छ स्वार्थों के कारण या केवल रीति-रिवाज के वशीभूत होकर या अपनी निर्बलता के कारण, अजितेन्द्रिय 'लोगों'-भोगी, विलासी 'सन्तों'- को दान दे देते हैं। ओह! यह तो तुम्हारी दी हुई धन-शक्ति का घोर दुरुपयोग है, यह पाप है। यह दान नहीं है। यह या तो रिश्वत है या आत्मघात करना है। नहीं, यह सम्पूर्ण मुनष्य-समाज का व राष्ट्र का घात करना है, द्रोह करना है। जो मनीषी नहीं हैं उन्हें धन देने का विचार भी हमारे मन में नहीं आना चाहिए, देने की इच्छा (दित्सा) ही नहीं होनी चाहिए। जिसे अपने पर काबू नहीं उसके पास गया हुआ धन उस द्वारा सर्वनाश का कारण होता है। इसलिए, हे शचीपते! मुझे इतनी शक्ति प्रदान करो कि मैं अनुचित दान के लिए स्पष्ट 'न' कर सकूं। भोगियों को दिये जाने वाले दान में सम्मिलित न होने की हिम्मत कर सकूं। हे प्रभो! मैं तो उसी को दान दूं जो अपने मन का ईश होने के कारण जनता के हृदयों का भी ईश हो, अतएव जिसके पास गया हुआ धन सब जनता के लिए हो-सर्व जनता के कल्याण में ही स्वभावतः ठीक-ठीक उपयुक्त हो जाता हो। **शब्दार्थः**- शचीपते-हे शक्ति के स्वामिन्! यत् अहम्-यदि मैं गोपतिः स्याम्-धन-भूमि आदि का स्वामी होऊं तो (मेरी मति ऐसी हो कि) मैं अस्मै मनीषिणे-इस मन के ईश, पूरे जितेन्द्रिय पुरुष के लिए ही दित्सेयम्-इस धन शक्ति को देना चाहूं और शिक्षेयम्-इसे ही दूं।

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

बढ़ता राजनैतिक जातिवाद

सत्ता के लिए भारत में जिस प्रकार से जातिवाद का बीज बोकर समाज में बिखराव का जो खेल खेला जा रहा है निःसंदेह वह पूरी तरह से देश को बर्बाद करने की नीति का हिस्सा ही कहा जाएगा। जिस भारत की एकता की पूरे विश्व में प्रशंसा की जाती है, वर्तमान में वही भारत देश आज संकीर्णता के दायरे में दिखाई दे रहा है। हमारे देश में विविधताओं के होने के बाद भी सांस्कृतिक और सामाजिक एकता का जो ताना बाना है, उसे विश्व के कई देश अजूबा ही मानते हैं। इस कारण विश्व के कई देश हमारे देश की संस्कृति को अपनाने की ओर आकर्षित हो रहे हैं। देश के सांस्.तिक दर्शन की अवधारणा हमारे मूल वैदिक धर्म, हमारी विविधता में एकता की संस्कृति पर टिकी हुई है। किन्तु तेजी से प्रगतिशील समाज को आज जातियों में बांट देने का काम हमारी सरकारों द्वारा बखूबी किया जा रहा है। वास्तव में भारत में जितने भी धर्म या संप्रदाय हैं, उनमें से आज जितना हमारे मूल धर्म में बिखराव दिखाई देता है उतना संभवतः किसी और संप्रदाय में दिखाई नहीं देता। नेताओं ने कभी भी मुसलमान और ईसाई संप्रदाय को जातियों में विभाजित करने का कुचक्र नहीं रचा। ऐसा करने की हिम्मत ये नेता लोग कर भी नहीं सकते। क्योंकि इन संप्रदाओं के लोग अपने संप्रदाय की रक्षा करना जानते हैं।

हैदराबाद में एक छात्र की आत्महत्या के बाद राजनेताओं ने जिस तरह पूरे देश के सामाजिक ताने बाने को बिखेर कर खडा कर दिया क्या यह लोग इसे वापिस समेट पाएंगे? अब सवाल यह आता है कि जातिवाद का जहर घोलने का काम करने के लिए उन्हें कौन प्रेरित कर रहा है। इसमें अगर राष्ट्रीय .ष्टिकोण से सोचा जाए तो यह कहना तर्कसंगत होगा कि ऐसे मामलों पर राजनीति कभी नहीं की जानी चाहिए, बल्कि ऐसे प्रकरण घटित न हों इसके लिए देश में राजनीति करने वाले सभी दलों को व्यापकता के साथ विचार विमर्श करना चाहिए। हमारे देश में सर्व धर्म समभाव की बात की जाती रही है लेकिन क्या ऐसे विरोध प्रदर्शन के चलते इस समभाव की कल्पना की जा सकती है। कदापि नहीं। जो लोग इस आत्महत्या पर विरोध करते रहे हैं, वह किसी न किसी प्रकार से भारत की सांस्कृतिक अवधारणा को मिटाने का ही कुचक्र कर रहे हैं। जातिवाद के आधार पर देश में जो विद्वेष बढ़ रहा है, ऐसे मामले आग में घी डालने के समान है। ऐसे मामलों पर देशवासियों को अत्यंत सावधानी बरतना चाहिए।

आज हमारे राजनेताओं को अपनी दृष्टि व्यापक करनी होगी और यह समझना होगा कि राजनीति राष्ट्रनिर्माण का काम है। आज हरेक राजनीतिक दल को वोट चाहिए और उसके लिए सही तरीका यह है कि वे अपने दल के लिए वोट जुटाने में विचारधारा और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण यानि विकास की योजना का प्रचार-प्रसार करें। जनमत बनाना प्रत्येक राजनीतिक दल का कर्त्तव्य है लेकिन जाति आधारित राजनीति समाज गठन में बाधक है। यह बात सभी राजनीतिक दलों को समझना होगा। आखिर ऐसे में सवाल उठता है कि आधुनिक लोकतंत्र में जाति व्यवस्था को मजबूत करने का अपकर्म किसके द्वारा किया जा रहा है? क्या जातिवादी दल या नेता ही मरणासन्न जाति व्यवस्था को बार-बार पुनर्जीवित नहीं कर रहे हैं ? चिंता इस बात की है कि ये जातीय आंकड़े जातिवादी जहर को भारत की नस-नस में फैला देंगे। व्यक्ति की अपनी पहचान नष्ट हो जाएगी। वह मवेशियों की तरह अपने जातीय झुंड के नाम से पहचाना जाएगा। यदि भारत को महान और शक्तिशाली राष्ट्र बनाना है तो इसका आधार जातिवाद कभी नहीं हो सकता? इस पर जनता और तंत्र में बैठे सभी को गहन विचार करने की जरूरत है। अन्यथा जनतंत्र खतरे में पड़ जायेगा।

महंगाई, बेरोजगारी, देश का अन्नदाता और राष्ट्रविरोधी तत्वों व् आम लोगों से जुड़े सवालों की जगह अगर नेताओं को जातीयता की दुकान अधिक भा रही है तो इसे जनता को ही समझना होगा कि वह इनके स्वार्थरुपी चंगूल से कैसे मुक्ति पाएं। यह तभी संभव है जब जनता इनके कारगुजारियों को समझें और इनके मंसूबों को त्याग कर देशहित में सोचे कि कैसे गरीबी व महंगाई दूर होगी और यह सोचना आप सभी को है कि क्या चाहिए संमृद्ध देश या जातिवाद? **-सम्पादक**

प्रेरक प्रसंग

यह परिवर्तन कैसे हुआ?

विवाहों पर अब पुनः आडम्बर और कुरीतियां बढ़ती जा रही हैं। आर्य समाज की स्थापना के समय विवाहों पर वेश्याओं के नाच गाने हुआ करते थे, जो संघर्ष करके आर्य समाज ने बन्द करवाये। जहां वेश्याएं नहीं आती थी या नहीं बुलाई जाती थीं, वहां परिवार वाले तथा उनके सम्बन्धी ही गन्दे गाने गाया करते थे। आज से चालीस वर्ष पूर्व भी ऐसा रिवाज था। आर्य समाज ने इसके उन्मूलन के लिए बड़ा प्रशंसनीय कार्य किया।

सर्वप्रथम माता भाग्यवती जी (माई भागवती हिरयाणा ग्रामवाली) के मन में यह विचार आया कि विवाहों पर अश्लील गाने बन्द होने चाहिए। आपने इन्हें हटाने के लिए विवाह के अवसर पर गाने योग्य सुन्दर गीतों की रचना की। आर्य लोगों में इनका प्रचलन हो गया। इसका सर्वत्र स्वागत होने लगा। लाला देवराजजी जालन्धरवालों ने एक उत्सव पर कन्या महाविद्यालय की छोटी-छोटी कन्याओं को माई भागवती जी के भजन तैयार करवाकर सुनाये तो लोग यह देखकर और सुनकर ढंग रह गये कि कन्याएं ऐसे सुन्दर भजन भी गा सकती हैं।

फिर तो सब आर्य गीतकारों ने ऐसे विषयों पर कई भजन बना दिये। हरियाणा प्रान्त में तो पंडित बस्तीरामजी तथा अन्य आर्य कवियों ने ऐसे गीत रचे हैं कि गांव-गांव में विवाह के अवसर पर गाये जाते हैं। माता भागवती जी को यह बुराई अखरी तो उन्होंने इसे दूर करने की ठान ली। सब भले पुरुषों को इसी प्रकार एक-एक बुराई को उखाड़ने के लिए अपनी शक्ति लगानी चाहिए।

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30-8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

महर्षि दयानन्द समाज सुधारक के रूप में

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सामाजिक सुधार के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका का निर्वाह किया। उन्होंने भारतीय समाज में उत्पन्न विसंगतियों के निवारण का जो प्रयास किया वह एक ओर मानवतावादी मूल्यों पर आधारित था तो दूसरी ओर वह परम्परागत भारतीय संस्कृति के मूल्यों पर भी आधारित था। आर्य समाज द्वारा समाज सुधार कार्य को प्राथमिकता दी गयी तथा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का हर सम्भव प्रयास किया गया। स्वामी दयानन्द जी ने नई समाज की रचना की कल्पना की। उन्होंने नये मानस संगठन के लिए और नई सर्जना-क्षमता से सक्रिय होने के लिए भारतीय व्यक्तित्व को वैदिक संस्कृति के आधार पर प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया। उन्होंने वेदों के प्रमाण्य का आधार विवेक संगत ही ग्रहण किया है। वेदों में समस्त ज्ञान की अभिव्यक्ति है वह सहज ही सबके लिए समान रूप ग्राह्य है। स्वामी दयानन्द ने वैदिक संस्कृति के माध्यम से जिन मानवीय मूल्यों की स्थापना की है वे भारतीय समाज की आधुनिक प्रगति तथा रचना की दृष्टि से उपयोगी एवं अनुकूल प्रतीत होती है।

उन्नीसवीं शताब्दी में बाल विवाह का प्रचलन समाज में व्यापक हो गया था। अल्पायु में लड़के लड़कियों का विवाह कर दिया जाता था। कम आयु में लड़कों का निधन होने से समाज में विधवाओं की संख्या में वृद्धि हो रही थी। विधवाओं को समाज में हीन दृष्टि से देखा जाता था। स्वामी दयानन्द जी नारी के सामाजिक अधिकारों के प्रति सर्वथा सचेत थे। उन्होंने बाल विवाह, वृद्ध विवाह, बेमेल विवाह आदि से होने वाले सामाजिक अत्याचारों को मिटाने के लिए अथक प्रयत्न किया और स्त्रियों को पूर्ण सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, नैतिक स्वतंत्रता का अधिकारिणी बनाया।

स्वामी दयानन्द जी का मत है कि ''बाल्यावस्था में विवाह का परिणाम है कि ब्रह्मचर्य के अभाव में युवक एवं युवतियों के शारीरिक व मानसिक शक्तियों का समुचित विकास नहीं हो पाता है और जिससे इस देश की उन्नति में बाधा पहुंचती है।'' स्वामी जी के विचार में चौबीस वर्ष के बाद विवाह होने से पुरुष का वीर्य परिपक्व, शरीर बलिष्ठ होता है तथा 16 वर्ष के पश्चात् स्त्री का गर्भाशय और शरीर बलयुक्त हो जाता है जिससे उत्तम सन्तान प्राप्त होती है। स्वामी जी के विचार में विवाह की उत्तम आयु लड़कियों के लिए 16 से 24 वर्ष और पुरुषों के लिए 25 से 48 वर्ष होनी चाहिए। स्वामी जी ने इस कुप्रथा को समाप्त करने के लिए राजशक्ति के प्रयोग की परामर्श दी थी। शारदा अधिनियम एवं भारत सरकार द्वारा कानूनी दृष्टि से 18 वर्ष की लड़की एवं 21 वर्ष की आयु के लड़के को मान्यता दिए जाने से भारतीय समाज में बाल-विवाह के प्रचलन में निरन्तर कमी हो रही है। वर्तमान समय में भी आर्य समाज द्वारा बाल विवाह की कुरीति को समाप्त करने हेतु प्रयास किये जा रहे हैं।

स्वामी दयानन्द जी के प्रादुर्भाव के समय विवाह पद्धति में अनेक दोष-अन्धविश्वास, आडम्बर समाज में प्रचलित थे। स्वामी दयानन्द ने जनमानस का ध्यान विवाह पद्धतियों में दोषों की ओर आकृष्ट किया और इन दोषों को समाप्त करने के लिए प्रयास किया। स्वामी जी ने दहेज तथा अन्य अपव्यय की निन्दा करते हुए ब्रह्म विधि से विवाह को सर्वश्रेष्ठ बताया है। विवाह सम्बन्ध का निर्धारण नाइयों द्वारा किया जाता था। वर-वधू की जन्म पत्रियों को मिलाकर के विवाह सम्बन्ध तय किये जाते थे। आर्य समाज ने इन दोषों को दूर करने का प्रयत्न किया। विवाह सम्बन्ध का निर्धारण के लिए गुण, कर्म, स्वभाव की समानता को प्रदान किया। स्वामी दयानन्द का मन्तव्य था कि स्त्री पुरुषों का विवाह हो उन्हें विद्या, कुल, रूप, शरीर, धन, गुण, कर्म, स्वभाव आदि के तुल्य होना चाहिए और विवाह सम्बन्ध का निर्धारण माता-पिता के स्थान पर युवक-युवती को स्वेच्छा पूर्वक करना चाहिए। उन्होंने न केवल स्वयंवर विवाह का समर्थन किया अपितु अन्तर्जातीय, अन्तर्देशीय, अन्तर्धार्मिक विवाहों की अनुमति प्रदान की है। महर्षि के क्रान्तिकारी विचारों ने नारी जागरण की दिशा में अद्‌भुत कार्य किया। इससे स्त्री जाति को नवजीवन और नई दिशा मिली।

महर्षि पुरुष के साथ नारी की समानता का पूर्ण समर्थन करते हैं। स्वामी जी ने आर्ष धर्म के रूप में गृहस्थ की पवित्रता की दृष्टि से विधवाओं में पुनर्विवाह को उचित माना है। आपके अनुसार जब पुरुषों को द्वितीय विवाह की आज्ञा दी जाती है तो स्त्रियों को भी द्वितीय विवाह से नहीं रोकना चाहिए। विधवाओं को स्वावलम्बी बनाने के उद्देश्य से आर्य समाज ने अनेक विधवाश्रमों की स्थापना की है जिसमें विधवा स्त्री के भरण पोषण के साथ-साथ उन्हें विभिन्न लघु उद्योगों सिलाई कढ़ाई आदि का प्रशिक्षण दिया है। स्वामी मंगलदेव की प्रेरणा से सन् 1909 में आगरा में 'विधवा हितकारिणी सभा की स्थापना हुई थी। सन् 1911 में आगरा विधवाश्रम स्थापित हुआ जिसमें प्रारम्भ में 3 विधवाएं थीं। बाद में निरन्तर वृद्धि होती गयी और प्रतिवर्ष 100 विधवाएं आश्रम में प्रविष्ट होने लगीं, महर्षि दयानन्द ने पर्दाप्रथा के समान सतीप्रथा तथा वेश्यावृत्ति का विरोध किया है। वेश्यावृत्ति के साथ-साथ तीर्थ स्थानों पर स्वयं माता-पिता द्वारा कर्मकाण्डी हिन्दू परिवार कन्यादान करने की जो कुप्रथा प्रचलित थी उसे स्वामी जी ने घृणित और त्याज्य कर्म बताया है। आर्य समाज द्वारा पर्वतीय नायक कन्याओं जो वेश्यावृत्ति में संलग्न थी उनका उद्धार किया तथा मेरठ में 'नायक बालिका आश्रम' खोला गया। जिससे यह प्रथा समाप्त हो सकी।

उन्नीसवीं शताब्दी में पौराणिक ग्रन्थों के आधार पर समाज में स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं दिया गया था। वेदों को स्वामी दयानन्द ने अपौरुषेय माना है और वेदों को ज्ञान, सत्य की अनुभूति का एकमात्र आधार घोषित किया है। स्वामी दयानन्द जी के अनुसार प्रत्येक हिन्दू चाहे वह निम्न जाति का हो या उच्च जाति का, स्त्री हो या पुरुष वेदाध्ययन करना चाहिए। स्वामी जी के अनुसार वेद ही ऐसा ग्रन्थ है जिसकी छत्रछाया में संसार के सभी मानव सुख शान्ति पा सकते हैं। नारी को स्वामी दयानन्द ने पुरुषों के समकक्ष माना है और वेदादि का दोनों को समान ज्ञान प्राप्त करने का अधिकारी माना है। ज्ञान स्वरूप वेदका ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार प्रत्येक मानव को है। स्वामी दयानन्द ने वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध हिन्दू स्त्रियों पर अमानवीय बन्धन दूर करने के प्रयास किए।

आर्य समाज के प्रादुभाव के समय भारतीय समाज में निम्न जातियों के सदस्य अछूत माने जाते थे। इनके विरुद्ध असहनीय और अकथनीय अत्याचार होते थे। दक्षिण में अस्पृश्यता की प्रथा भयावह थी। स्वामी दयानन्द ने निम्न वर्ण के साथ हो रहे अत्याचारों की निन्दा की। स्वामी जी जन्म के आधार पर किसी को अछूत नहीं मानते थे। उन्होंने गुरुकुलों में निःशुल्क शिक्षा, खान-पान में समानता का व्यवहार प्रदान किया। आर्य समाज, द्वारा अछूतोद्धार आन्दोलन किए गये। स्वामी दयानन्द जी ने समस्त धार्मिक कार्यों में शूद्रों को भाग लेने में स्वतन्त्रता प्रदान की तथा इन पर किसी भी प्रकार का प्रतिबन्ध न लगाने की सलाह दी। आर्य समाज द्वारा धर्म परिवर्तन किए गए व्यक्ति को पुनः स्वधर्म में शामिल किया गया। स्वामी दयानन्द ने अपने जीवनकाल में अछूतो तथा दलितों का उद्धार करने तथा समाज में उचित स्थान दिलाने का जो प्रयत्न किया गया था वह उसके पश्चात् आर्य समाज द्वारा जारी रखा गया।

आर्य समाज द्वारा अनाथों असहायों की सहायता एवं सुरक्षा के लिए अनाथालयों की स्थापना की गई। अनाथों, बेसहारा, अबलाओं के संरक्षण के लिए आर्य समाज द्वारा महत्वपूर्ण एवं उपयोगी कार्य किए जा रहे हैं। महर्षि दयानन्द ने अपने जीवनकाल में सन् 1866 ई. में फिरोजपुर पंजाब में हिन्दू अनाथालय स्थापित किया था। इस संस्था द्वारा और अन्य आर्य समाज द्वारा संचालित अनाथालयों के माध्यम से सहस्रों अनाथों का पालन हुआ तथा उन्हें सुशिक्षित एवं स्वावलम्बी बनाया जारहा है।

उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय समाज में अनेक जातियों एवं उपजातियां उत्पन्न हो गयी थीं। तत्कालीन समाज में जाति व्यवस्था विकृत थी और यह व्यवस्था सामाजिक राष्ट्रीय संस्था बनकर समाज को विघटन की ओर अग्रसर कर रही है। स्वामी दयानन्द ने भारतीय समाज में प्रचलित कट्टर जाति प्रथा का खण्डन किया एवं इसे दूर करने का प्रयास किया। स्वामी दयनन्द ने जातपात, छुआछूत, ऊंचनीच के विरुद्ध उपदेश दिया। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र का आधार जन्म के स्थान पर कर्म माना। स्वामीजी के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र किसी भी वर्ण का व्यक्ति सदस्य बन सकता है और वैदिक धर्म की मान्यताओं का अनुसरण करके समाज को संगठित कर सकता है।

महर्षि दयानन्द ने धर्म के निरर्थक कर्मकाण्डों के नाम पर चलाई गयी कुरीतियों, अन्धविश्वासों जड़ पूजाओं व मान्यताओं का घोर विरोध किया। महर्षि के अनुसार शूद्रों सहित समस्त मानव मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है। महर्षि ने भूतप्रेत, राक्षस, पिशाच का खण्डन किया है। जब कोई मर जाता है तो उसे प्रेत कहते हैं। दाह संस्कार हो जाने के बाद भूत अर्थात् बीता हुआ हो जाता है। स्वामी जी के विचार में भूत, प्रेत आदि स्वयं अपने आप में बैठा डर है इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। समाज में व्याप्त इस अन्धविश्वास को उन्होंने दूर करने का प्रयास किया।

हिन्दू समाज में पुत्र प्राप्त हेतु अनेक अन्धविश्वास तथा व्रत, ग्रह, नक्षत्र, जन्मपत्र, मुहूर्त को महत्त्व नहीं दिया है। जादू, टोना आदि अन्धविश्वास पर स्वामी जी विश्वास नहीं करते थे।

स्वामी दयानन्द ने सामाजिक क्षेत्र के सुधार के महत्वपूर्ण विकास किए। स्वामी जी ने अंधविश्वास पाखण्ड, पौराणिकवाद, धर्म की आड़ में हो रहे अत्याचारों स्त्रियों की निम्न स्थिति, दहेज प्रथा, बाल विवाह, विधवा पुनर्विवाह निषेध, देवदासी प्रथा, पर्दाप्रथा आदि कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने अपने विचारों से समाज में जागृति उत्पन्न की और समाज को नई दिशा दी। स्वामी जी के अन्धविश्वास एवं पाखण्ड के खण्डनएवं हिन्दू समाज को संगठित करने का प्रयास समाज में परिवर्तन और आधुनिकीकरण का सूचक है।

-डॉ. आर्येन्दु द्विवेदी, गोरखपुर

आर्य समाज द्वारा अनाथों असहायों की सहायता एवं सुरक्षा के लिए अनाथालयों की स्थापना की गई। अनाथों, बेसहारा, अबलाओं के संरक्षण के लिए आर्य समाज द्वारा महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी कार्य किए जा रहे हैं। महर्षि दयानन्द ने अपने जीवनकाल में सन् 1866 में फिरोजपुर पंजाब में हिन्दू अनाथालय स्थापित किया था। इस संस्था द्वारा और अन्य आर्य समाज द्वारा संचालित अनाथालयों के माध्यम से सहस्रों अनाथों का पालन हुआ तथा उन्हें सुशिक्षित एवं स्वावलम्बी बनाया जा रहा है।

पृष्ठ 1 का शेष **महर्षि दयानन्द सरस्वती ...**

श्री सुभाष सचदेवा; पूर्व विधायक, एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल के प्रधान श्री सत्यानन्द आर्य जी अतिथि के रूप में पधारे। कार्यक्रम के अंत में 60 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ सदस्यों को शॉल, पीत वस्त्र, श्रीफल एवं सम्मान पत्र देकर अभिनन्दन किया गया।

वहीं पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों को भी पीत वस्त्र, कॉमिक्स देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम से पूर्व आर्य समाज मोती नगर के संस्थापक सदस्य श्री ओमप्रकाश धूपड़ जी के पौत्र और श्री भारत धूपड़ जी के बड़े सुपुत्र श्री मानव धूपड़ जी के आकस्मिक युवावस्था में निधन पर दो मिनट का मौन धारण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। **-सत्यपाल आर्य**

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में सम्मिलित यज्ञमान परिवार– कुलभूषण खुराना, रतन तनेजा, भारत भूषण मल्होत्रा एवं श्री मनीष नागपाल

भजन प्रस्तुत करती मातृशक्ति व श्री नरेद्र आर्य 'सुमन' एवं संगीत मंडली का स्वागत करते आर्य समाज के अधिकारी

भजन प्रस्तुत करती मातृ शक्ति, श्री सुभाष आर्य का स्वागत करते श्री ओमप्रकाश आर्य, श्री बलदेव जिंदल जी का सम्मान पत्र उनके भतीजे को प्रदान करते महामंत्री श्री विनय आर्य, राजेन्द्र दुर्गा एवं रवि चड्ढ़ा जी

आर्य समाज के वरिष्ठ सदस्यों का सम्मान करते सर्वश्री आचार्य चन्द्रशेखर, विक्रम नरूला, रवि चढ्डा, उपप्रधान श्री शिव कुमार मदान, वीरेन्द्र सरदाना, मंत्री श्री सुरेन्द्र आर्य

आर्य समाज के वरिष्ठ सदस्यों का सम्मान करते सर्वश्री एस.के. कोछड़, बलदेव राज आर्य, विक्रम नरूला, सुखबीर सिंह आर्य

आर्य समाज के वरिष्ठ सदस्यों का सम्मान करते सर्वश्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा, सतीश चड्ढा एवं अन्य आर्यजन, पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों का स्वागत

आर्य समाज मोती नगर के अधिकारियों मंत्री श्रीमती अनीता वाधवा, प्रधान श्री राजभरत भारद्वाज एवं कोषाध्यक्ष प्रभात भारद्वाज का स्वागत एवं सम्मान करते श्रीमती शारदा आर्या, श्रीमती प्रकाश कथूरिया, नीरज आर्य, जोगेन्द्र खट्टर, सुरेन्द्र गुप्ता एवं अन्य आर्यजन।

पृष्ठ 1 का शेष

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव ...

संयोजक श्री कीर्ति शर्मा; प्रधान; आर्य समाज करोल बाग रहे। वैदिक विद्वान आचार्य पुनीत ने वक्ता के रूप में अपनी भूमिका निभाई। इसके बाद श्री फनीश पंवार एवं साथियों ने सुन्दर भजनों की प्रस्तुति देकर श्रोताओं को झूमने पर मजबूर कर दिया। कार्यक्रम में घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ योजना के अनुभवों की प्रस्तुति, पुस्तक मेले एवं आर्य समाज डी.सी.एम. के कार्यकर्त्ताओं को भी सम्मानित किया गया।

सार्वजनिक सभा का आयोजन दोपहर 1 बजे से आरंभ हुआ। जिसकी अध्यक्षता महाशय धर्मपाल जी, प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली ने की। कार्यक्रम में श्री सत्यानन्द आर्य ने कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में शिरकत की। इस अवसर पर डॉ. रामप्रकाश जी, कुलाधिपति, गु.का.वि.वि. हरिद्वार ने मुख्य वक्ता के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। श्री नितिञ्जय चौधरी, मंत्री, आर्य अनाथालय, दरियागंज विशिष्ठ अतिथि व सारस्वत अतिथि के रूप में डॉ बिसराम रामबिलास, प्रधान, आर्य, प्र.सभा द. अफ्रीका ने उपस्थिति दर्ज करवाई। इस अवसर पर स्वामी विज्ञानान्द, मंत्री, विश्व हिन्दू, परिषद ने उद्बोधन व डॉ स्वामी देवव्रत, प्रधान संचालक, सार्व. आर्य वीर दल ने आशीर्वाद आर्यजनों को दिया।

इस अवसर पर ''माता छजियादेवी स्मृति पुरस्कार''- श्री सुरेन्द्र मोहन गुप्ता जी को प्रदान किया गया। ''श्री सुरेश ग्रोवर आर्य कार्यकर्त्ता पुरस्कार'' एवं ''डॉ. मुमुक्ष आर्य माता विद्यावती महिला पुरस्कार'' आगामी उत्सवों में प्रदान किए जाएंगे। क्योंकि पुरस्कार लेने वाले किन्हीं कारणों से उपस्थित न हो सके। **-सत्यपाल आर्य**

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव पर आयोजित विशाल ऋषि मेला चित्रों के आईने में

डॉ. सत्यकाम जी के ब्रह्मत्व में आयोजित यज्ञ एवं उपस्थित यज्ञमान सर्वश्री धर्मदेव खुराना, सुभाष चांदना, अतुल आर्य एवं संदीप अग्रवाल

खेल प्रतियोगिताओं का उद्घाटन श्री प्रकाश शर्मा ने किया-प्रतियोगिताओं में भाग लेते बच्चे। ध्वजारोहण के साथ शुभारंभ करते श्री अरुण बंसल जी

सार्वजनिक सभा को सम्बोधित करते मुख्य वक्ता डॉ. रामप्रकाश जी, स्वामी देवव्रत सरस्वती जी, स्वामी विज्ञानानन्द सरस्वती जी, आचार्य पुनीत जी, दिनेश आर्य, श्रीमती प्रकाश कथूरिया, कुमारी नन्दनी आर्या एवं अन्य महानुभाव एवं देवियां। आदिवासी गुरुकुल के छात्र-छात्राओं की प्रस्तुति, अष्टाध्यायी कंठस्थ करने वाली बालिका व परिवार का सम्मान।

बच्चों की प्रस्तुति, भजनोपदेशक श्री फनीश कुमार पंवार एवं साथियों की संगीतमयी प्रस्तुति। दिव्य पथ एवं व्याख्यान शतक का लोकार्पण, आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रिका के प्रधान डॉ. बिसराम रामबिलास जी का सपत्नीक स्वागत सम्मान।

श्री सुरेन्द्र मोहन गुप्ता जी का सम्मान, श्री प्रकाश राय उप प्रधान आर्य समाज ऑकलैंड (न्यूजीलैंड) का सपत्नीक सम्मान। पुस्तक मेला एवं आर्य समाज डीसीएम रेलवे कॉलोनी के कार्यकर्त्ताओं का सम्मान।

Continue from last issue

Glimpses of the Atharva Veda

-Priyavrata Das

Soul Seated in Impregnable Ayodhya

Chapter x, hymn 3, all the 31 verses have described the constitution of human body as a purposeful wonder. It is named as Ayodhya, that cannot be overcome by force and has the capacity to resist all attacks. The Vedic knowledge was revealed to the first group of men who found themselves surrounded with unfamiliar things which had no names till then. Those seers hunted out for the appropriate names, and with ingenuity they ascribed names from the vedic words. Thus Vedic Ayodhya is no historical city. Says the verse:

" with eight circles and nine gates or portals impregnable is the castle of the enlightened ones. Therein lies the golden chest, conductor to the world of bliss-encompassed by brilliant light." The following verse reads, 'Within that there is a mighty being as its Soul; surely they who have realized the Lord Supreme, know him. These verses point to the dwelling place of the Soul, the controller of the body whose eight circles are the famous Muladhara, Svadhisthana, Manipuraka, Anahata, Visuddha, Lalana, Ajna and Sahasrana discovered by the Yogins. The nine gates, obviously, are the two eyes, two ears, two nostrils, the mouth, the urinary track and the anus.

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।

तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः (Av.x.2.31)

Astacakra navadvara devanam purayodhya.

tasyam hiranyah kosah svargo jyotisavrtah..

The Flag Bearing the Emblem of Sun

The Vedas prescribe for men the flag bearing the symbol of the inspiring sun, he that invigorates the external and internal vision of a human being. Being the protector of the earth, he pervades all times and climes. The eye of the Lord shining in the limitless sky, he has been burning himself from time immemorial to sustain all life on the earth. The verse says: "Having the symbol of sun as banner, single-minded, may we canquer the evil forces. Let the rays of the sun carry leadership and vigour". The Solar light has seven colours with respective virtues:"

Colour	Quality	Thought
Green	Adds to intellect	Intelligence
Blue	Adds to strength	Power
Sky blue	Adds to splendour	Splendour
Orange	Purifier	Purity
Yellow	Helps digestion	Digestion
Violet	Adds to patience	Patience

The world-citizen marches on the Earth with the sunlag as the symbol of his mission to establish fraternity, peace and power among his fellowmen.

एता देवसेनाः सूर्यकेतवः सचेतसः।

अमित्रान्नो जयन्तु स्वाहा। (Av.v.21.12)

Eta devasenah suryaketavh sacetasah.

amitranno jayantu svaha..

Extolling the Ruler

"O Ruler, You pollute the polluter. You are weapon of the missile. You are the bolt of the thunder-bolt. Attain superiority. Surpass your equals."

"O Ruler, You are dynamic. You are the prime mover. You are the counter-point to the evil. Attain superiority. Surpass your equals."

"O Ruler, you are bright. You are blazing. You are light. You are illumination. Attain superiority. Surpass Your equals."

दूष्या दूषिरसि हेत्या हेतिरसि मेन्या मेनिरसि।

आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम।। (Av.II.11.1)

स्रक्त्योऽसि प्रतिसरोऽसि प्रत्यभिचरणोऽसि।

आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम।। (Av.II.11.2)

शुक्रोऽसि भ्रोऽसि स्वरसि ज्योतिरसि।

आप्नुहि श्रेयांसमति संम क्राम।। (Av.II.11.5)

Dusya dusirasi hetya hetirasi menya menirasi.

apnuhi sreyamsamati samam krama..

Saraktya si pratisaro si pratyabhicarano si.

apnuhi sreyamsamati samam krama..

Sukro si bhrajo si svarasi jyotirasi.

apnuhi sreyamsamati samam krama..

To Be Continue...

संस्कृतम्

पर्यावरण–संरक्षणम्

वायुवाकाश–जलादीनां, प्रदूषण–निवारणम्।

संरक्षणं च भूम्यादेः, पर्यावरण–रक्षणम्।।

यत् परितः आवृणोति आच्छादयति तत् पर्यावरणम्। वायुमंडल जलमंडलं भूमंडलम् च जगत् आच्छादयति, अतः पर्यावरण–शब्देन मृत्तिका, जलं, वायुः, प्रकाशः, आकाशश्च गृह्यन्ते। यद् एतान् दूषयति, तत् पर्यावरण–दूषकं कथ्यते।

मुख्यानि प्रदूषणानि सन्ति–1. वायु–प्रदूषणम्, 2. जल–प्रदूषणम्, 3. भूमि–प्रदूषणम्ण 4. ध्वनि–प्रदूषणम्।

वायु–मण्डले विविधगैसाः विशेषानुपाततः सन्ति। औद्योगिकीकरणेन गैसानाम् अनुपाताः विनाश्यन्ते, अतः वायु–प्रदूषणं भवति।

वायु–प्रदूषण–निराकरणार्थम् एते उपायाः करणीयाः। धूम्रत्याग–पराणां वाहनानां न्यूनता विधेया। वृक्षाणां छेदने निरोधः स्यात्। वृक्षारोपणं विधेयम्। परिमाणु–विस्फोटे प्रतिबन्धः स्यात्।

तडाग–नद्यादीनां जलं मल–मूत्रादि–त्यागेन, यन्त्रालयादीनाम् अपशिष्टस्य प्रवाहेण च प्रदूष्यते। प्रदूषित–जल–पानेन पाण्डुज्वरादि–रोगा जायन्ते, पाशवो म्रियन्ते। अतः तडाग–नद्यादिषु मलमूत्रादिकम् अन्यद् अपशिष्टं च न प्रवाह्यम।

यन्त्रालयादीनाम् अपशिष्टस्य प्रक्षेपणेन भूमेः उर्वराशक्तिः क्षीयते, अतः खाद्यान्नं प्रचुरं न भवति। भूरक्षार्थम्

औद्योगिकम् औद्योगिकम् अपशिष्टम् अन्यत्र क्षेप्यम्।

ध्वनि–विस्तारक–यन्त्रादीनां प्रयोगेण तेषाम् उच्चध्वनिः कर्णरोगं शिरोवेदनां रक्तचापे वृद्धि च करोति। एवं ध्वनि–प्रदूषणं विविध–रोगाणां जनकः। तस्य निवारणार्थम् उच्चध्वनि–कारकेषु यन्त्रेषु प्रतिबन्धः स्यात्। उक्तं च वेद–पुराणादिषु–

भूमि दृंह, पृथिवीं मा हिंसीः। यजु. 23.16

दिवं दृंह, दिवं मा हिंसीः।। यजु. 15.64

अप्सु–अन्तर्–अमृतम्, अप्सु भेषजम्। ऋग्. 1.23.12

पद्मपुराणे नदीषु मल–मूत्रादि–त्यागो निषिध्यते।

मूत्रं वाऽथ पुरीषं वा, गंगातीरे करोति यः।

न दृष्टा निष्कृतिस्तस्य, कल्पकोटि–शतैरपि। पद्म पु.

रचनानुवादकौमुदी

(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

पंजाब सरकार को हार्दिक धन्यवाद

महर्षि दयानन्द के गुरु, गुरु विरजानन्द सरस्वती की जन्म स्थली करतारपुर में आधुनिक तकनीक से युक्त गुरु विरजानन्द यादगारी भवन का निर्माण पंजाब सरकार की ओर से करवाया जा रहा है जिसके लिए समस्त आर्य समाजों की ओर से पंजाब सरकार के मुख्य मंत्री सरदार प्रकाश सिंह बादल जी को हार्दिक धन्यवाद। ज्ञात हो उपरोक्त जन्म स्थली पर गुरुविरजानन्द गुरुकुलम महाविद्यालयः विगत वर्षो से क्रियाशील है जिसमें लगभग 175 विद्यार्थी निःशुल्क शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

आर्य समाज रोहताश नगर द्वारा स्वामी दयानन्द का 192वां जन्मदिवस सम्पन्न

सामाजिक चेतना के प्रणेता और आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती के 192वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आर्य समाज मन्दिर, रोहताश नगर दिल्ली में भजन संध्या का आयोजन किया गया। पं. सुखपाल आर्य के प्रेरक भजनों ने शमा बांध दी। संस्कृत अकादमी दिल्ली के उपाध्यक्ष प्रो. जी.डी. शर्मा ने अपने संबोधन में स्वामी दयानन्द एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों पर प्रकाश डालते हुए देश एवं समाज के लिए इनकी उपयोगिता को प्रतिपादित किया। सभा की अध्यक्ष्यता आर्य केन्द्रीय सभा की उपप्रधान उषा किरण आर्या ने की और

संचालन रामपाल पांचाल प्रधान ने किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिधि पूर्वी दिल्ली नगर निगम के महापौर श्री हर्ष मल्होत्रा ने कहा कि हर किसी को स्वामी दयानन्द के जीवन से रूबरू होना चाहिए। कार्यक्रम में पूर्व विधायक जितेन्द्र महाजन, क्षेत्रीय निगम पार्षद सुषमा शर्मा, केन्द्रीय सभा के मंत्री अभिमन्यु चावला तथा मंत्री एस.पी.सिंह, कोषाध्यक्ष जगदीश चन्द्र, राम स्वरूप शास्त्री, जवाहर भाटिया, विजय रानी, सुषमा सिक्का, शशि सर्राफ, मनमोहन मेहता, सरोज पुरंग, विजय बाला, जगदीश प्रसाद, हरिओम, आर्य समाज शक्करपुर से संतराम आर्य, सूरज मल विहार से अशोक कुमार गुप्ता, आर्य समाज झिलमिल कॉलोनी से सुनहरी लाल यादव आदि सम्मिलित थे।

अलगाववादी सिखों को गुरु ग्रन्थ साहिब की सीख – डॉ. विवेक आर्य

खालिस्तानी बनने के चक्कर में कुछ सिख भाई मस्जिद जाकर नमाज अदा करने से लेकर, 'हम हिन्दू नहीं है।'
'सिख गौ को माता नहीं समझते।'
'सिख मुसलमानों के अधिक निकट हैं क्योंकि दोनों एक ईश्वर को मानते हैं।'
जैसी बयानबाजी कर हिन्दुओं और सिखों के मध्य दरार डालने का कार्य कर रहे हैं।

हमें यह कहते हुए खेद हो रहा है कि अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो की नीति का स्वार्थ एवं महत्वाकांक्षाओं के चलते पहले के समान अनुसरण हो रहा है। हम यह क्यों भूल जाते हैं कि एक काल में पंजाब में हर परिवार के ज्येष्ठ पुत्र को अमृत चखा कर सिख अर्थात् गुरुओं का शिष्य बनाया जाता था जिससे कि यह देश, धर्म और जाति की रक्षा का संकल्प ले। यह धर्म परिवर्तन नहीं अपितु कर्त्तव्य पालन का व्रत ग्रहण करना था। खेद है हम जानते हुए भी न केवल अपने इतिहास के प्रति अनजान बन जाते हैं अपितु अपने गुरुओं की सीख को भी भूल जाते हैं।

गुरु साहिबान बड़े श्रद्धा भाव से सिखों को हिन्दू धर्म रक्षा का सन्देश देते हैं। गुरु नानक जी से लेकर गुरु गोविन्द सिंह जी सब हिन्दू धर्म को मानने वाले थे एवं उसी की रक्षा हेतु उन्होंने अपने प्राणों की आहुति तक दे दी। उदाहरण के लिए देखिये पंथ प्रकाश संस्करण 5 में पृष्ठ 25 में गुरुनानक देव जी के विषय में लिखा है-

पालन हेत सनातन नेतै, वैदिक धर्म रखन के हेतै।
आप प्रभु गुरु नानक रूप, प्रगट भये जग मे सुख भूपम्।।

अर्थात् सनातन वैदिक धर्म की रक्षा के लिए भगवान गुरु नानक जी के रूप में प्रकट हुए।

गुरु तेगबहादुर जी के वचन बलिदान देते समय पंथ प्रकाश में लिखे हैं-

हो हिन्दू धर्म के काज आज मम देह लुटेगी।

अर्थात् हिन्दू धर्म के लिए आज मेरा शरीर होगा।

औरंगजेब ने जब गुरु तेगबहादुर से पूछा कि आप किस धर्म के लिए अपने प्राणों की बलि देने के लिए तैयार हो रहे हैं तो उन्होंने यह उत्तर दिया कि-

आज्ञा जो करतार की, वेद चार उचार, धर्म तास को खास लख, हम तिह करत प्रचार।
वेद विरुद्ध अधर्म जो, हम नहीं करत पसंद, वेदोक्त गुरुधर्म सो, तीन लोक में चंद।।

सन्दर्भ श्री गुरुधर्म धुजा पृष्ठ 48, अंक 3 कवि सुचेत सिंह रचित

अर्थात् ईश्वर की आज्ञा रूप में जो चार वेद हैं उनमें जिस धर्म का प्रतिपादन है उसका ही हम प्रचार करते हैं। वेद विरुद्ध अधर्म होता है उसे हम पसंद नहीं करते। वेदोक्त गुरुधर्म ही तीनों लोकों में चन्द्र के समान आनंददायक है।

गुरु गोविन्द सिंह के दोनों पुत्रों जोरावर सिंह और फतेह सिंह जी को जब मुसलमान होने को कहा गया तो उन्होंने जो उत्तर दिया उनके अंतिम शब्द पंथ प्रकाश में इस प्रकार से दिए गए हैं-

गिरी से गिरावो काली नाग से डसावो हा हा प्रीत नां छुड़ावों इक हिन्दू धर्म पालसों अर्थात् तुम हमें पहाड़ से गिरावो चाहे सांप से कटवाओ पर एक हिन्दू धर्म से प्रेम न छुड़वाओ।

आदि ग्रन्थ में वेदों की महिमा बताते हुए कहा गया है-

वाणी ब्रह्मा वेद धर्म दृढ़हु पाप तजाया ।

अर्थात् वेद ईश्वर की वाणी हैं उसके धर्म पर दृढ़ रहो ऐसा गुरुओं ने कहा है और पाप छुड़ाया है (सन्दर्भ- आदि ग्रन्थ साहिब राग सुहई मुहल्ला 4 बावा छंद 2 तुक 2)

दिया बले अँधेरा जाये वेद पाठ मति पापा खाय वेद पाठ संसार की कार पढ़-पढ़ पंडित करहि बिचार बिन बूझे सभ होहि खुआर, नानक गुरुमुख उतरसि पार अर्थात् जैसे दीपक जलाने से अँधेरा दूर हो जाता है ऐसे ही वेद का पाठ करके मनन करने से पाप खाये जाते हैं। वेदों का पाठ संसार का एक मुख्य कर्त्तव्य है। जो पंडित लोग उनका विचार करते हैं वे संसार से पार हो जाते हैं वेदों को बिना जाने मनुष्य नष्ट हो जाते हैं (सन्दर्भ- आदि ग्रन्थ साहिब राग सुहई मुहल्ला 1 शब्द 17)

गुरुनानक देव जी की यह प्रसिद्ध उक्ति कि वेद कतेब कहो मत झूठे, झूठा जो ना विचारे अर्थात् वेदों को जूठा मत कहो जूठा वो है जो वेदों पर विचार नहीं करता सिख पंथ को हिन्दू सिद्ध करता है। जहाँ तक इस्लाम का सम्बन्ध है गुरु ग्रन्थ साहिब इस्लाम की मान्यताओं से न केवल भारी भेद रखता है अपितु उसका स्पष्ट रूप से खंडन भी करता है।

1. सुन्नत का खंडन

काजी तै कवन कतेब बखानी।।
पदत गुनत ऐसे सभ मारे किनहूं खबरि न जानी।।१।। रहाउ।।
सकति सनेहु करि सुंनति करीऐ मै न बदउगा भाई।।
जउ रे खुदाइ मोहि तुरकु करैगा आपन ही कटि जाई।।२।।
सुंनति कीए तुरकु जे होइगा अउरत का किआ करीऐ।।
अरध सरीरी नारि न छोडै ता ते हिंदू ही रहीऐ।। 3।।
छाडि कतेब रामु भजु बउरे जुलम करत है भारी।।
कबीरै पकरी टेक राम की तुरक रहे पचिहारी।। 4।। 8।।

सन्दर्भ- राग आसा कबीर पृष्ठ 477

अर्थात् कबीर जी कहते हैं ओ काजी तो कौन सी किताब का बखान करता है। पढ़ते हुए, विचरते हुए, सबको ऐसे मार दिया जिनको पता ही नहीं चला। जो धर्म के प्रेम में सख्ती के साथ मेरी सुन्नत करेगा सो मैं नहीं कराऊँगा। यदि खुदा सुन्नत करने ही से ही मुसलमान करेगा तो अपने आप लिंग नहीं कट जायेगा। यदि सुन्नत करने से ही मुस्लमान होगा तो औरत का क्या करोगे? अर्थात् कुछ नहीं और अर्धांगि नारी को छोड़ते नहीं इसलिए हिन्दू ही रहना अच्छा है। ओ काजी! कुरान को छोड़! राम भज१ तू बड़ा भारी अत्याचार कर रहा है, मैंने तो राम की टेक पकड़ ली है, मुस्लमान सभी हार कर पछता रहे हैं।

2. रोजा, नमाज कलमा, काबा का खंडन

रोजा धरै निवाज गुजारै कलमा भिसति न होई।।
सतरि काबा घट ही भीतरि जे करि जानै कोई।। 2।।

सन्दर्भ- राग आसा कबीर पृष्ठ 480

अर्थात् मुसलमान रोजा रखते हैं और नमाज गुजारते हैं कलमा पढ़ते है और कबीर जी कहते हैं इन किसी से बहिष्त न होगी। इस घट (शरीर) के अंदर ही 70 काबा के अगर कोई विचार कर देखे तो।

कबीर हज काबे हउ जाइ था आगै मिलिआ खुदाइ।।
सांई मुझ सिउ लरि परिआ तुझै किन्हि फुरमाई गाइ।।197।।

सन्दर्भ- राग आसा कबीर पृष्ठ 1375

अर्थात कबीर जी कहते हैं मैं हज करने काबे जा रहा था आगे खुदा मिल गया , वह खुदा मुझसे लड़ पड़ा और बोला ओ कबीर तुझे किसने बहका दिया।

3. बांग का खंडन

कबीर मुलां मुनारे किआ चढहि सांई न बहरा होइ।।
जा कारनि तूं बांग देहि दिल ही भीतरि जोइ।।184।।

सन्दर्भ- राग आसा कबीर पृष्ठ 1374

अर्थात् कबीर जी कहते हैं कि ओ मुल्ला। खुदा बहरा नहीं जो ऊपर चढ़कर बांग दे रहा है। जिस कारण तू बांग दे रहा है उसको दिल ही में तलाश कर।

4. हिंसा (कुरबानी) का खंडन

जउ सभ महि एकु खुदाइ कहत हउ तउ किउ मुरगी मारै।।1।।
मुलां कहहु निआउ खुदाई।।
तेरे मन का भरमु न जाई।।1।। रहाउ।।
पकरि जीउ आनिआ देह बिनासी माटी कउ बिसमिलि कीआ।।
जोति सरूप अनाहत लागी कहु हलालु किआ कीआ।।2।।
किआ उजू पाकु कीआ मुहु धोइआ किआ मसीति सिरु लाइआ।।
जउ दिल महि कपटु निवाज गुजारहु किआ हज काबै जाइआ।।3।।

सन्दर्भ विलास प्रभाती कबीर पृष्ठ 1350

अर्थात् कबीर जी कहते हैं ओ मुसलमानो। जब तुम सब में एक ही खुद बताते हो तो तुम मुर्गी को क्यों मारते हो। ओ मुल्ला! खुदा का न्याय विचार कर कह। तेरे मन का भ्रम नहीं गया है। पक करके जीव ले आया, उसकी देह को नाश कर दिया, कहो मिट्टी को ही तो बिस्मिल किया। तेरा ऐसा करने से तेरा पाक उजू क्या, मुंह धोना क्या, मस्जिद में सिजदा करने से क्या, अर्थात् हिंसा करने से तेरे सभी काम बेकार हैं।

कबीर भांग माछुली सुरा पानि जो जो प्रानी खांहि।।
तीरथ बरत नेम कीए ते सभै रसातलि जांहि।।233।।

सन्दर्भ विलास प्रभाती कबीर पृष्ठ 1377

अर्थात् कबीर जी कहते हैं जो प्राणी भांग, मछली और ज्ञाराब पीते हैं, उनके तीर्थ व्रत नेम करने पर भी सभी रसातल को जायेंगे।

रोजा धरै मनावै अलहु सुआदति जीअ संघारै।।
आपा देखि अवर नही देखै काहे कउ झख मारै।।1।।
काजी साहिबु एकु तोही महि तेरा सोचि बिचारि न देखै।।
खबरि न करहि दीन के बउरे ता ते जनमु अलेखै।।1।। रहाउ।।

सन्दर्भ रास आगा कबीर पृष्ठ 483

अर्थात् ओ काजी साहिब तू रोजा रखता हैं अल्लाह को याद करता है, स्वाद के कारण जीवों को मारता है। अपना देखता है दूसरों को नहीं देखता है। क्यों समय बर्बाद कर रहा है। तेरे ही अंदर तेरा एक खुदा है। सोच विचार के नहीं देखता है। ओ दिन के पागल खबर नहीं करता है इसलिए तेरा यह जन्म व्यर्थ है।

वेद की मान्यताओं का मंडन एवं इस्लाम की मान्यताओं का खंडन गुरु ग्रन्थ साहिब स्पष्ट रूप से करते हैं। इस पर भी अब हठ रूप में कोई सिख भाई अलगाववाद की बात करता है तो वह न केवल अपने आपको अँधेरे में रख रहा है अपितु गुरु ग्रन्थ साहिब के सन्देश की अवमानना भी कर रहा है।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

07 मार्च 2016 से 13 मार्च, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 10 मार्च 2016/ 11 मार्च, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 9 मार्च, 2016

शहीद दिवस पर आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की ओर से

बच्चों के लिए विशेष भेंट

मूल्य प्रति कॉमिक्स 30/-

प्रतिष्ठा में,

आकर्षक वैदिक शगुन लिफाफे

नये डिजाइनों में उपलब्ध

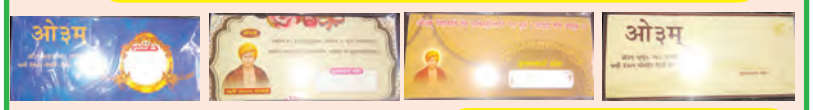

बिना सिक्के वाला 300/- रुपये सैकड़ा

सिक्के वाला 500/- रुपये सैकड़ा

प्राप्ति स्थानः

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली -110001

मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें

विशेष सूचना

घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ

योजना संबंधी विशेष सूचना

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ योजना प्रारंभ हुए एक वर्ष पूर्ण हो रहा है। जिन महानुभावों ने इस योजना के अन्तर्गत यज्ञ करवाए हैं। वे अपने यज्ञमानों की सूची नाम, पता और मोबाईल नम्बर सहित तत्काल भिजवाने की कृपा करें। सबसे अधिक यज्ञ करवाने वाले आर्य महानुभावों/पुरोहितों को सभा की ओर से होली के शुभ अवसर पर सम्मानित किया जा सके। ये सूची आप ईमेल aryasabha@yahoo.com पर भेजें या 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेज देंवे।

हवन-यज्ञ के लिए सर्वोत्तम प्रदूषण मुक्त

गाय के गोबर से तैयार समिधा

मात्र 25/- पैकेट (टिक्की व समिधा आकार में उपलब्ध)

प्राप्ति स्थान

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली-110001 एवं सम्पर्क करें : मो. 09540040339

वर चाहिए

एम.एड. नेट क्वालीफाई, 31 वर्षीय, लम्बाई 5'1'' कन्या हेतु योग्य वर चाहिए। पिता का स्वयं का व्यवसाय। सम्पर्क करें - श्री रवि मलिक, रोड-78, म.नं. 6 वैस्ट पंजाबी बाग, नई दिल्ली-110026, मो. 9811661766, 9013089900

साप्ताहिक आर्य सन्देश में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धांतिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह